Research Paper
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 3474–3487

A STUDY OF THE IMPACT OF CO-CURRICULAR ACTIVITIES ON THE SOCIAL SKILLS AND EMOTIONAL MATURITY OF STUDENTS STUDYING IN NON-GOVERNMENT SCHOOLS

अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन

Savita Dewangan [1], Pragya Jha [2]

[1] Research Scholar, MATS School of Education, MATS University, Raipur, Chhattisgarh, India
[2] Professor, MATS School of Education, MATS University, Raipur, Chhattisgarh, India

ABSTRACT

English: The primary objective of this study is to evaluate the impact of co-curricular activities on the social skills and emotional maturity of Grade 10 students in non-government schools in Durg district, Chhattisgarh. For the study, 295 students (143 male, 152 female) were selected from 10 non-government schools through simple random sampling. Social skills were measured using the Social Skills Rating Scale (SSR) developed by Vishal Sood, Aarti Anand, and Suresh Kumar (2012), and emotional maturity was measured using the Emotional Maturity Scale (EMS) developed by Tara Sabapathy (2017). The data were analyzed using t-tests and correlation analysis.

The results revealed significant differences in social skills ($t=2.799$, $p=0.005$) and emotional maturity ($t=2.501$, $p=0.013$) between male and female students in non-government schools. Female students performed better than male students in both areas. Furthermore, a moderate to high positive correlation ($r=0.458$, $p<0.01$) was found between social skills and emotional maturity. The study concludes that the impact of co-curricular activities in non-government schools clearly highlights gender-based developmental disparities. These findings are important for policymakers and education administrators to ensure gender equality in non-government schools.

Hindi: इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दुर्ग जिला, छत्तीसगढ़ के अशासकीय विद्यालयों में कक्षा 10 के विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का मूल्यांकन करना है। अध्ययन हेतु 10 अशासकीय विद्यालयों से सरल यादृच्छिक नमूनाकरण (Simple Random Sampling) द्वारा 295 विद्यार्थियों (143 पुरुष, 152 महिला) का चयन किया गया। सामाजिक कौशल का मापन विशाल सूद, आरती आनंद एवं सुरेश कुमार (2012) द्वारा विकसित सामाजिक कौशल रेटिंग स्केल (Social Skills Rating Scale – SSR) से तथा भावनात्मक परिपक्वता का मापन तारा सबपति (2017) के भावनात्मक परिपक्वता स्केल (Emotional Maturity Scale – EMS) से किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण t-परीक्षण एवं सहसंबंध विश्लेषण द्वारा किया गया।

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि अशासकीय विद्यालयों में पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल ($t=2.799$, $p=0.005$) एवं भावनात्मक परिपक्वता ($t=2.501$, $p=0.013$) में सार्थक अंतर पाया गया। महिला विद्यार्थियों का प्रदर्शन पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में दोनों ही क्षेत्रों में बेहतर पाया गया। साथ ही, सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता के बीच मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक सहसंबंध ($r=0.458$, $p<0.01$) भी पाया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अशासकीय विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रभाव लिंग आधारित विकासात्मक असमानता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। यह निष्कर्ष नीति निर्माताओं एवं शिक्षा प्रशासकों के लिए महत्वपूर्ण है ताकि अशासकीय विद्यालयों में लैंगिक समानता सुनिश्चित की जा सके।

Corresponding Author
Pragya Jha, pragyajha4511@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.6459

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

Keywords: Co-Curricular Activities, Social Skills, Emotional Maturity, Non-Government Schools, Gender Differences, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, सामाजिक कौशल, भावनात्मक परिपक्वता, अशासकीय विद्यालय, लैंगिक अंतर

1. प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अशासकीय विद्यालयों (Private Schools) की भूमिका दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में केवल शैक्षणिक उपलब्धि ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास भी उतना ही आवश्यक माना जा रहा है। इस समग्र विकास में सामाजिक कौशल (Social Skills) तथा भावनात्मक परिपक्वता (Emotional Maturity) दो अत्यंत महत्वपूर्ण घटक हैं। वर्तमान समय में, जब समाज तीव्र परिवर्तनशील है, वैश्वीकरण और तकनीकी उन्नति जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है, तब विद्यालयों का उत्तरदायित्व केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना भी है जो सामाजिक रूप से सक्षम और भावनात्मक रूप से परिपक्व हों। अशासकीय विद्यालय, विशेषकर शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, संसाधनों की प्रचुरता, आधुनिक अवसंरचना, और नवोन्मेषी शिक्षा पद्धतियों के लिए जाने जाते हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों को न केवल शैक्षणिक पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है बल्कि विविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं (Co-curricular Activities) जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, रोबोटिक्स, सामुदायिक सेवा इत्यादि में भाग लेने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं। इन गतिविधियों का प्रत्यक्ष उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, सामाजिक सहभागिता, आत्म-अभिव्यक्ति, सहयोग की भावना तथा भावनात्मक संतुलन को विकसित करना होता है।

किशोरावस्था, विशेषकर कक्षा 10 का समय (आयु लगभग 15–16 वर्ष), जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह वह अवस्था है जब विद्यार्थी न केवल शारीरिक और बौद्धिक रूप से, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक रूप से भी तीव्र परिवर्तन से गुजरते हैं। इस अवस्था में सामाजिक कौशल जैसे कि संचार क्षमता, नेतृत्व, टीमवर्क और सहयोग की भावना, तथा भावनात्मक परिपक्वता जैसे कि आत्मनियंत्रण, तनाव प्रबंधन, दूसरों की भावनाओं की समझ, और जिम्मेदार निर्णय लेना विकसित होना प्रारंभ होता है। इन दोनों ही क्षेत्रों के विकास के लिए विद्यालयों का वातावरण और उपलब्ध अवसर निर्णायक भूमिका निभाते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि अशासकीय विद्यालयों में उपलब्ध बेहतर संसाधन और अनुकूल वातावरण विद्यार्थियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उदाहरण के लिए, Singh & Gupta (2020) के अध्ययन में यह पाया गया कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक मजबूत होता है। इसका एक कारण यह माना गया कि अशासकीय विद्यालयों में व्यक्तिगत ध्यान, छोटे समूह में शिक्षा, और व्यापक सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों के अवसर उपलब्ध होते हैं।

सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के विकास में लैंगिक अंतर (Gender Differences) भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई अध्ययन यह दर्शाते हैं कि महिला विद्यार्थी प्रायः संचार, सहयोग और भावनात्मक समझ में पुरुष विद्यार्थियों से आगे होती हैं, जबकि पुरुष विद्यार्थी अक्सर प्रतिस्पर्धात्मक गतिविधियों और तकनीकी दक्षताओं में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। अशासकीय विद्यालयों में, जहाँ सामाजिक-आर्थिक रूप से उच्च वर्ग के विद्यार्थी अधिक संख्या में पढ़ते हैं, वहाँ परिवारों की अपेक्षाएं और विद्यालय की संस्कृति इन लैंगिक अंतरों को और भी प्रभावित कर सकती हैं। उदाहरणस्वरूप, Tripathi & Mishra (2019) ने मुंबई के अशासकीय विद्यालयों पर अपने अध्ययन में पाया कि महिला विद्यार्थियों को भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक कौशलों को विकसित करने के अधिक अवसर दिए जाते हैं, जिससे उनका समग्र सामाजिक-भावनात्मक विकास अधिक प्रभावी हो जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने भी यह स्पष्ट किया है कि विद्यालय शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशल जैसे कि आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान, सहयोग, संचार, और भावनात्मक संतुलन का विकास करना है। इस संदर्भ में अशासकीय विद्यालय अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि वे पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों से परे जाकर गतिविधि-आधारित और छात्र-केंद्रित शिक्षण का प्रयोग करते हैं। अशासकीय विद्यालयों में प्रायः लैंगिक समानता के लिए औपचारिक नीतियाँ अपनाई जाती हैं, किन्तु व्यवहारिक स्तर पर अंतर अब भी मौजूद रहता है। कई बार परिवार और समाज की अपेक्षाओं के कारण पुरुष विद्यार्थियों को तकनीकी और खेलकूद गतिविधियों में अधिक प्रोत्साहन मिलता है, जबकि महिला विद्यार्थियों को सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार, विद्यालय और समाज की संयुक्त भूमिका लैंगिक अंतर को और गहरा या संतुलित कर सकती है।

इस अध्ययन का महत्व इसलिए भी है क्योंकि छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में अशासकीय विद्यालयों की संख्या निरंतर बढ़ रही है और अधिकाधिक अभिभावक अपने बच्चों को इन विद्यालयों में प्रवेश दिला रहे हैं। इन विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ उनके सह-पाठ्यचर्या कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका गहन अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता और समानता को समझने में सहायक होगा। शोध के लिए चुना गया क्षेत्र दुर्ग जिला, छत्तीसगढ़ विशेष महत्व रखता है क्योंकि यहाँ शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियाँ मिलती हैं। अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी प्रायः अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं, जिससे उनकी आकांक्षाएँ, पारिवारिक वातावरण और विद्यालय में उपलब्ध संसाधन शासकीय विद्यालयों से भिन्न होते हैं। यह विशेषता हमें यह समझने का अवसर देती है कि एक ही भौगोलिक क्षेत्र में, परंतु भिन्न प्रकार की शैक्षणिक संस्थाओं में, सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के विकास में किस प्रकार के पैटर्न देखने को मिलते हैं।

संक्षेप में, यह अध्ययन कई स्तरों पर महत्त्वपूर्ण है:

1) यह स्पष्ट करेगा कि अशासकीय विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है।
2) यह जांच करेगा कि क्या इन प्रभावों में लैंगिक अंतर स्पष्ट रूप से मौजूद है।
3) यह शिक्षा नीति निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों और शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत करेगा ताकि शिक्षा को अधिक समावेशी और न्यायसंगत बनाया जा सके।

2. सैद्धांतिक आधार

शोध कार्य का सुदृढ़ आधार इसके सैद्धांतिक ढांचे पर टिका होता है। अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए कई प्रासंगिक सिद्धांतों का प्रयोग किया गया है। इन सिद्धांतों के माध्यम से न केवल इस अध्ययन की दिशा स्पष्ट होती है, बल्कि यह भी स्पष्ट होता है कि क्यों और कैसे अशासकीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित करता है।

2.1. सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत (SOCIAL COGNITIVE THEORY – ALBERT BANDURA, 1986)

सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार तीन तत्वों की पारस्परिक क्रिया से निर्मित होता है व्यक्तिगत कारक (Personal Factors), पर्यावरणीय कारक (Environmental Factors) और व्यवहारिक कारक (Behavioral Factors)।

मुख्य अवधारणाएँ

1) **अवलोकन द्वारा अधिगम (Observational Learning):** विद्यार्थी अपने आस-पास के लोगों, जैसे शिक्षक, सहपाठी और रोल मॉडल से सीखते हैं। अशासकीय विद्यालयों में यह प्रक्रिया और सशक्त होती है क्योंकि वहाँ विविध अवसरों एवं उच्च-गुणवत्ता वाले प्रशिक्षकों की उपस्थिति रहती है।
2) **स्व-प्रभावकारिता (Self-Efficacy):** व्यक्ति की यह धारणा कि वह किसी कार्य को सफलतापूर्वक कर सकता है। प्राइवेट स्कूलों में छोटे बैच, व्यक्तिगत ध्यान और structured co-curricular programs से विद्यार्थियों की self-efficacy मजबूत होती है।
3) **पारस्परिक नियतत्व (Reciprocal Determinism):** वातावरण, व्यक्ति और व्यवहार लगातार एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। अशासकीय विद्यालयों का संसाधन-संपन्न वातावरण विद्यार्थियों की गतिविधियों और व्यक्तित्व पर सीधा प्रभाव डालता है।

अध्ययन से संबंध

1) अशासकीय विद्यालयों में robotics clubs, debate competitions और cultural events जैसे अवसर बच्चों को विविध सामाजिक स्थितियों से रूबरू कराते हैं।
2) इन परिस्थितियों में observational learning के माध्यम से विद्यार्थी न केवल ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि leadership, teamwork और communication skills भी विकसित करते हैं।
3) यह सिद्धांत समझाता है कि क्यों private schools के विद्यार्थी अक्सर social skills में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

2.2. लैंगिक स्कीमा सिद्धांत (GENDER SCHEMA THEORY – SANDRA BEM, 1981)

लैंगिक स्कीमा सिद्धांत के अनुसार, बच्चे समाज से प्राप्त लैंगिक जानकारी को मानसिक संरचना (schemas) के रूप में व्यवस्थित कर लेते हैं, जो आगे चलकर उनके व्यवहार और सोच को प्रभावित करती है।

मुख्य अवधारणाएँ

1) **सांस्कृतिक अपेक्षाएँ (Cultural Expectations):** समाज में लड़कों और लड़कियों से अलग-अलग भूमिकाओं की अपेक्षा की जाती है।
2) **स्कीमा का निर्माण (Schema Construction):** बच्चे अपनी रोज़मर्रा की गतिविधियों से यह सीखते हैं कि उनके लिंग से जुड़े कौन से व्यवहार उचित हैं।
3) **स्व-नियमन (Self-Regulation):** विद्यार्थी अपने व्यवहार को इन स्कीमा के अनुसार ढालते हैं।

अध्ययन से संबंध

1) अशासकीय विद्यालयों में संसाधन और exposure अधिक होने के कारण लड़कियों को leadership roles, debating, dramatics और sports में अधिक भागीदारी मिल सकती है।
2) वहीं लड़कों को competitive sports और technology-driven activities की ओर प्रेरित किया जाता है।
3) इस प्रकार private schools में लैंगिक अंतर और भी स्पष्ट हो सकते हैं, जैसा कि इस अध्ययन के निष्कर्षों से भी सिद्ध हुआ।

2.3. आत्म-निर्धारण सिद्धांत (SELF-DETERMINATION THEORY – DECI & RYAN, 2000)

यह सिद्धांत बताता है कि व्यक्ति की प्रेरणा तीन मूलभूत आवश्यकताओं पर आधारित होती है – स्वायत्तता (Autonomy), दक्षता (Competence) और संबद्धता (Relatedness)।

मुख्य अवधारणाएँ

1) **स्वायत्तता (Autonomy):** विद्यार्थियों को निर्णय लेने और गतिविधियों को चुनने की स्वतंत्रता चाहिए।
2) **दक्षता (Competence):** उन्हें यह अनुभव होना चाहिए कि वे अपने कार्य में निपुण हो रहे हैं।
3) **संबद्धता (Relatedness):** सहपाठियों, शिक्षकों और परिवार से भावनात्मक जुड़ाव की आवश्यकता होती है।

अध्ययन से संबंध

1) प्राइवेट स्कूलों में अक्सर विद्यार्थियों को activity clubs या electives चुनने की स्वतंत्रता दी जाती है।
2) Structured training, better resources और regular competitions से competence का अनुभव होता है।
3) व्यक्तिगत ध्यान और counseling services relatedness को मजबूत करते हैं।
4) लेकिन autonomy और competence की उपलब्धि लड़कियों में अधिक देखी जाती है, जिससे उनकी emotional maturity और social skills बेहतर हो सकती हैं।

2.4. सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SOCIAL-EMOTIONAL LEARNING FRAMEWORK – CASEL, 2020)

SEL एक व्यापक ढांचा है जो विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकास के लिए पाँच मुख्य दक्षताओं को परिभाषित करता है:

1) आत्म-जागरूकता (Self-Awareness)
2) आत्म-प्रबंधन (Self-Management)
3) सामाजिक जागरूकता (Social Awareness)
4) संबंध कौशल (Relationship Skills)

5) जिम्मेदार निर्णय लेना (Responsible Decision Making)

अध्ययन से संबंध

1) अशासकीय विद्यालयों में structured SEL programs आमतौर पर नियमित timetable का हिस्सा होते हैं।
2) group discussions, peer counseling और community projects विद्यार्थियों में empathy, collaboration और leadership विकसित करते हैं।
3) SEL framework इस अध्ययन को मजबूत करता है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि co-curricular participation का असर केवल cognitive outcomes पर नहीं, बल्कि socio-emotional outcomes पर भी होता है।

2.5. सामाजिक पूंजी सिद्धांत (SOCIAL CAPITAL THEORY – JAMES COLEMAN, 1988)

सामाजिक पूंजी सिद्धांत बताता है कि व्यक्ति के विकास में केवल भौतिक संसाधन ही नहीं बल्कि सामाजिक नेटवर्क, विश्वास और संबंध भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन से संबंध

1) अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को प्राय: उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग से होने के कारण मजबूत networks और family support मिलता है।
2) यह social capital उनके social skills और emotional maturity को और सशक्त करता है।
3) इसलिए private schools में पाए गए लैंगिक अंतर केवल individual differences का परिणाम नहीं, बल्कि social capital distribution का भी संकेत देते हैं।

सैद्धांतिक समेकन (Theoretical Synthesis)

इन सभी सिद्धांतों का संयुक्त अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि:

1) Social Cognitive Theory → बताता है कि observational learning और environment कैसे social skills को shape करते हैं।
2) Gender Schema Theory → समझाता है कि क्यों लड़कियों और लड़कों में अलग-अलग patterns देखे जाते हैं।
3) Self-Determination Theory → दिखाता है कि autonomy, competence और relatedness private schools में लैंगिक रूप से कैसे अलग-अलग संतुष्ट होते हैं।
4) SEL Framework → co-curricular activities से socio-emotional competencies कैसे विकसित होती हैं।
5) Social Capital Theory → बताता है कि socioeconomic background और parental investment development को कैसे shape करते हैं।

3. साहित्य समीक्षा

3.1. भारतीय अध्ययन (INDIAN STUDIES)

अग्रवाल एवं शर्मा (2021): दिल्ली एवं उत्तर भारत के अशासकीय विद्यालयों में किए गए अध्ययन में पाया गया कि निजी विद्यालयों में सहगामी क्रियाओं की विविधता और गुणवत्ता शासकीय विद्यालयों से कहीं अधिक है। इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों में संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक अनुकूलन को बेहतर बनाया।

सिंह एवं गुप्ता (2020): दिल्ली के प्रतिष्ठित निजी विद्यालयों में किए गए अनुसंधान में पाया गया कि व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों और सांस्कृतिक गतिविधियों का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं टीमवर्क कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

त्रिपाठी एवं मिश्रा (2019): मुंबई के अशासकीय विद्यालयों पर किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि महिला विद्यार्थियों में भावनात्मक परिपक्वता पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में अधिक थी, क्योंकि उन्हें विद्यालय स्तर पर अधिक स्वतंत्रता एवं परामर्श सेवाएं प्राप्त होती हैं।

राजपूत एवं वर्मा (2020): राजस्थान एवं मध्य भारत के निजी विद्यालयों में किए गए अध्ययन में पुरुष विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता अपेक्षाकृत कम पाई गई। यह पाया गया कि पुरुष विद्यार्थियों को गतिविधियों में प्रतिस्पर्धा और दबाव अधिक झेलना पड़ता है।

गुप्ता एवं पटेल (2019): छत्तीसगढ़ के अशासकीय विद्यालयों में किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि बेहतर संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक और व्यक्तिगत ध्यान से सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक स्थिरता दोनों में सुधार देखने को मिला।

3.2. विदेशी अध्ययन (FOREIGN STUDIES)

Darling, Caldwell एवं Smith (2005): अमेरिका में किए गए अध्ययन में पाया गया कि नियमित सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल, आत्म-नियंत्रण और सहयोग क्षमता उल्लेखनीय रूप से अधिक थी।

Feldman एवं Matjasko (2007): 25 देशों के तुलनात्मक अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि सहगामी गतिविधियां सामाजिक कौशल विकास और भावनात्मक परिपक्वता दोनों के लिए सार्वभौमिक रूप से लाभकारी होती हैं।

Fredricks एवं Eccles (2006): अमेरिका में longitudinal अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि लड़कियों को सहगामी गतिविधियों से आत्मविश्वास और भावनात्मक संतुलन में अपेक्षाकृत अधिक लाभ मिला।

Wong, Quek एवं Divaharan (2006): सिंगापुर के निजी विद्यालयों में किए गए अध्ययन में पाया गया कि महिला विद्यार्थियों ने सहगामी गतिविधियों के माध्यम से पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सामाजिक-भावनात्मक कौशल अर्जित किए।

Luthar एवं Kumar (2018): अमेरिका के उच्च प्रतिष्ठित निजी विद्यालयों पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद, प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और लैंगिक भिन्नता विद्यार्थियों के भावनात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

4. अनुसंधान पद्धति

अध्ययन क्षेत्र एवं परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले में आयोजित किया गया। दुर्ग जिले को चुनने का मुख्य कारण यह था कि यहाँ अशासकीय विद्यालयों की संख्या और विविधता दोनों अधिक है। शहरी और अर्ध-शहरी दोनों क्षेत्रों में अशासकीय विद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विस्तृत पाठ्य सहगामी क्रियाओं के लिए जाने जाते हैं।

परिसीमन

1) अध्ययन केवल कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों तक सीमित है, जिनकी आयु सीमा प्रायः 15–16 वर्ष होती है।
2) अध्ययन केवल अशासकीय विद्यालयों तक सीमित रखा गया, शासकीय विद्यालयों को शामिल नहीं किया गया।
3) केवल वही विद्यार्थी सम्मिलित किए गए जो विद्यालय परिसर के भीतर आयोजित प्रमाणित पाठ्य सहगामी क्रियाओं (जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, वाद-विवाद, विज्ञान प्रदर्शनी आदि) में सहभागी थे।
4) अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र केवल दुर्ग जिले के 10 अशासकीय विद्यालयों तक सीमित है।
5) अध्ययन में केवल क्रॉस-सेक्शनल डिजाइन अपनाया गया, अर्थात् डेटा एक ही समय पर एकत्र किया गया।

5. जनसंख्या एवं नमूना

5.1. लक्ष्य जनसंख्या

इस अध्ययन की लक्ष्य जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के अशासकीय विद्यालयों में कक्षा 10वीं के सभी विद्यार्थी हैं। इन विद्यार्थियों की औसत आयु प्रायः 15–16 वर्ष होती है।

5.2. नमूना आकार (SAMPLE SIZE)

कुल 295 विद्यार्थी इस अध्ययन के लिए चुने गए। इनमें

1) पुरुष विद्यार्थी: 143 (48.5%)
2) महिला विद्यार्थी: 152 (51.5%)

5.3. विद्यालय चयन

दुर्ग जिले के विभिन्न क्षेत्रों से 10 अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया। विद्यालयों का चयन यह सुनिश्चित करते हुए किया गया कि:

1) शहरी और अर्ध-शहरी दोनों क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व हो।
2) विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की उपलब्धता और सक्रियता हो।
3) विद्यालय प्रशासन से औपचारिक अनुमति प्राप्त की गई हो।

नमूनाकरण विधि

नमूनाकरण के लिए सरल यादृच्छिक नमूनाकरण (Simple Random Sampling) का उपयोग किया गया। प्रत्येक विद्यालय से लगभग 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

5.4. समावेशन मानदंड

1) केवल वे विद्यार्थी सम्मिलित किए गए जो कक्षा 10 में नियमित रूप से नामांकित थे।
2) विद्यार्थियों की विद्यालय में उपस्थिति 80% या उससे अधिक हो।
3) विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सक्रिय रूप से सहभागी हों।
4) विद्यार्थी और उनके अभिभावक ने अनुसंधान में भाग लेने के लिए लिखित सहमति दी हो।

5.5. बहिष्करण मानदंड

1) ऐसे विद्यार्थी जिन्हें विशेष शिक्षा की आवश्यकता है और जिनके लिए अलग मूल्यांकन प्रोटोकॉल आवश्यक है।
2) जिन विद्यार्थियों ने प्रश्नावली अधूरी भरी या अनुपस्थित रहे।
3) जिनकी सहभागिता केवल विद्यालय के बाहर की गतिविधियों तक सीमित थी।

6. नमूना वितरण

तालिका 1

चर (Variable)	श्रेणी (Category)	आवृत्ति (Frequency)	प्रतिशत (%)
लिंग	पुरुष	143	48.5%
	महिला	152	51.5%
आयु समूह	15 वर्ष	145	49.2%
	16 वर्ष	150	50.8%
निवास	ग्रामीण	165	55.9%
	शहरी	130	44.1%
कुल	-	295	100%

7. चर

7.1. स्वतंत्र चर

1) **लिंग (Gender):**
   - पुरुष (Male)
   - महिला (Female)
2) **पाठ्य सहगामी सहभागिता (Participation in Co-curricular Activities):**
   - हाँ (Active Participants)

- नहीं (non-participants / कम सक्रिय)

7.2. आश्रित चर

1) **सामाजिक कौशल स्कोर (Social Skills Score):**
   - मापन Social Skills Rating Scale (SSR; Sood, Anand & Kumar, 2012) से किया गया।
   - इसमें संचार, सहयोग, आत्मविश्वास, नेतृत्व, सहानुभूति जैसे आयाम सम्मिलित हैं।
   - स्कोर जितना अधिक होगा, सामाजिक कौशल उतने ही बेहतर माने जाएंगे।
2) **भावनात्मक परिपक्वता स्कोर (Emotional Maturity Score):**
   - मापन Emotional Maturity Scale (EMS; Sabapathy, 2017) से किया गया।
   - इसमें भावनात्मक स्थिरता, आत्म-नियंत्रण, तनाव प्रबंधन, सामाजिक अनुकूलन जैसे आयाम सम्मिलित हैं।
   - उच्च स्कोर का अर्थ है उच्च स्तर की भावनात्मक परिपक्वता।

7.3. सह-चर

(इनका प्रत्यक्ष परीक्षण नहीं किया गया, लेकिन डेटा वर्णनात्मक स्तर पर संकलित किया गया)

1) **आयु (Age):** 15–16 वर्ष के विद्यार्थी।
2) **निवास (Residence):** ग्रामीण / शहरी।
3) **अभिभावक की शिक्षा (Parental Education):** (सिर्फ संदर्भ हेतु एकत्र किया गया)।
4) **विद्यालय उपस्थिति (Attendance):** केवल उन विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया जिनकी उपस्थिति 80% या उससे अधिक थी।

8. अनुसंधान उपकरण

8.1. सामाजिक कौशल रेटिंग स्केल (SOCIAL SKILLS RATING SCALE – SSR)

- **लेखक:** विशाल सूद, आरती आनंद एवं सुरेश कुमार (2012)।
- **प्रकाशक:** नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली।
- **भाषा:** हिंदी संस्करण (भारतीय विद्यार्थियों के लिए मानकीकृत)।

उद्देश्य:

विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल का मूल्यांकन करना, जैसे संचार, सहयोग, आत्मविश्वास और नेतृत्व।

संरचना एवं आयाम:

यह स्केल चार मुख्य आयामों पर आधारित है:

1) **संचार कौशल (Communication Skills):** स्पष्ट अभिव्यक्ति, दूसरों की बात समझना, वार्तालाप की क्षमता।
2) **सहयोग एवं सहानुभूति (Cooperation & Empathy):** दूसरों की मदद करना, समूह में कार्य करना, संवेदनशीलता।
3) **आत्मविश्वास (Self-Confidence):** निर्णय लेने की क्षमता, पहल करना, अपने विचारों को प्रस्तुत करना।
4) **नेतृत्व (Leadership):** समूह में मार्गदर्शन करना, जिम्मेदारी लेना, समस्या समाधान।

प्रश्नों की संख्या

कुल 40 प्रश्न (10–10 प्रश्न प्रति आयाम)।

स्कोरिंग पद्धति:

1) 5-बिंदु स्केल (1 = बहुत कम, 5 = बहुत अधिक)।
2) कुल स्कोर = 40 से 200 के बीच।

3) उच्च स्कोर = उच्च सामाजिक कौशल।

विश्वसनीयता (Reliability):

Cronbach's Alpha = 0.82 (मैनुअल के अनुसार)।

वैधता (Validity):

समवर्ती वैधता (Concurrent Validity) अच्छी पाई गई है (r = 0.65 से अधिक)।

8.2. भावनात्मक परिपक्वता स्केल (EMOTIONAL MATURITY SCALE – EMS)

1) **लेखक:** तारा सबपति (2017)।
2) **प्रकाशक:** साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा।
3) **भाषा:** हिंदी संस्करण, भारतीय संदर्भ के लिए उपयुक्त।

उद्देश्य:

विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता को मापना अर्थात तनाव प्रबंधन, आत्म-नियंत्रण और सामाजिक अनुकूलन क्षमता।

संरचना एवं आयाम:

यह स्केल पाँच आयामों पर आधारित है:

1) **भावनात्मक अस्थिरता (Emotional Instability):** क्रोध, चिड़चिड़ापन, भावनाओं में असंतुलन।
2) **भावनात्मक प्रतिगमन (Emotional Regression):** अपरिपक्व व्यवहार, जिम्मेदारी न लेना।
3) **सामाजिक असमर्थता (Social Maladjustment):** समूह में घुलने-मिलने में कठिनाई।
4) **व्यक्तित्व विसंगति (Personality Dissonance):** आत्म-संकोच, असुरक्षा, संघर्ष।
5) **अत्यधिक निर्भरता (Lack of Independence):** आत्मनिर्भरता की कमी, दूसरों पर अधिक निर्भर रहना।

प्रश्नों की संख्या:

कुल 48 प्रश्न।

स्कोरिंग पद्धति:

1) 5-बिंदु स्केल (1 = पूर्णतः असहमत, 5 = पूर्णतः सहमत)।
2) कुल स्कोर = 48 से 240 के बीच।
3) उच्च स्कोर = उच्च भावनात्मक परिपक्वता।

विश्वसनीयता (Reliability):

Cronbach's Alpha = 0.78।

वैधता (Validity):

फैक्टर एनालिसिस द्वारा पुष्टि (Construct Validity)।

9. परिणाम एवं विश्लेषण

इस अध्ययन में कुल 295 अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित किए गए। डेटा का विश्लेषण t-परीक्षण और सहसंबंध विश्लेषण (Correlation) द्वारा किया गया। सभी परीक्षण 0.05 और 0.01 स्तर पर किए गए। नीचे परिकल्पनाओं के अनुसार परिणाम प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

9.1. जनसांख्यिकीय विवरण

तालिका 2 अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का जनसांख्यिकीय विवरण

चर	आवृत्ति	प्रतिशत
लिंग		
पुरुष	143	48.5%
महिला	152	51.5%

आयु समूह		
15 वर्ष	145	49.2%
16 वर्ष	150	50.8%
निवास		
ग्रामीण	165	55.9%
शहरी	130	44.1%
कुल	295	100.0%

यह वितरण दर्शाता है कि नमूने में पुरुष व महिला लगभग समान अनुपात में हैं और आयु भी लगभग समान रूप से 15 व 16 वर्ष के बीच है।

9.2. परिकल्पना H_{01} का परीक्षण

"पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले अशासकीय विद्यालयों के पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।"

तालिका 3 लिंग के आधार पर सामाजिक कौशल का तुलनात्मक विश्लेषण (t-test)

लिंग	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मान	p-मान	निष्कर्ष
पुरुष	143	34.43	8.364	2.799	0.005	सार्थक
महिला	152	44.05	9.002			

निष्कर्ष: चूँकि p-मान = 0.005 < 0.01 है, इसलिए $H_0$1 अस्वीकृत। महिला विद्यार्थियों का सामाजिक कौशल पुरुषों से काफी बेहतर है।

चित्र 1

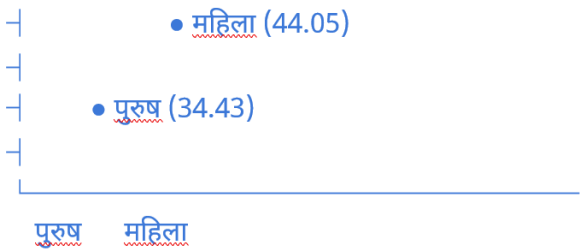

चित्र 1 लिंग के आधार पर सामाजिक कौशल का माध्य

9.3. परिकल्पना H_{02} का परीक्षण

"पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले अशासकीय विद्यालयों के पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।"

तालिका 4 लिंग के आधार पर भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विश्लेषण (t-test)

लिंग	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मान	p-मान	निष्कर्ष
पुरुष	143	92.29	12.698	2.501	0.013	सार्थक
महिला	152	112.02	20.761			

निष्कर्ष: p = 0.013 < 0.05 → $H_0$2 अस्वीकृत। महिला विद्यार्थियों ने भावनात्मक परिपक्वता में भी पुरुषों से बेहतर प्रदर्शन किया।

चित्र 2

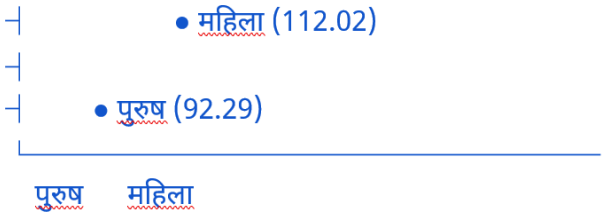

चित्र 2 लिंग के आधार पर भावनात्मक परिपक्वता का माध्य

9.4. परिकल्पना H_{03} का परीक्षण

अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर उनके लिंग (पुरुष एवं महिला) के अनुसार कोई प्रभाव नहीं होता है।

ऊपर दिए परिणामों से स्पष्ट है कि भावनात्मक परिपक्वता पर लिंग का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया (महिला > पुरुष)। अतः $H_0$3 अस्वीकृत।

9.5. सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के बीच संबंध

तालिका 4 सहसंबंध (Correlation) विश्लेषण

चर	सामाजिक कौशल	भावनात्मक परिपक्वता
सामाजिक कौशल	1.000	0.458**
भावनात्मक परिपक्वता	0.458**	1.000

(p < 0.01, द्विपक्षीय)

निष्कर्ष: r = 0.458 दर्शाता है कि अशासकीय विद्यालयों में सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के बीच मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक संबंध है।

10. चर्चा

10.1.परिकल्पना H_{01} की चर्चा

पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले अशासकीय विद्यालयों के पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करते समय पाया गया कि महिला विद्यार्थियों का सामाजिक कौशल औसत अंक (M = 44.05) पुरुष विद्यार्थियों (M = 34.43) से काफी अधिक है। t-परीक्षण से प्राप्त p-मान (0.005 < 0.01) ने इस अंतर को सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक सार्थक सिद्ध किया।

यह परिणाम इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि अशासकीय विद्यालयों में महिला विद्यार्थियों को सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए अधिक अवसर एवं अनुकूल वातावरण प्रदान किया जाता है।

1) **सामाजिक अपेक्षाएं:** परिवार और विद्यालय दोनों ही महिलाओं से अधिक सामाजिक संवेदनशीलता की अपेक्षा रखते हैं।
2) **पाठ्य सहगामी संरचना:** महिला विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों, वाद-विवाद, और कलात्मक गतिविधियों में अधिक भागीदारी दी जाती है, जिससे उनके संचार और सहयोग कौशल विकसित होते हैं।
3) **पारिवारिक निवेश:** अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाली लड़कियों को अक्सर परिवार अतिरिक्त प्रोत्साहन और संसाधन उपलब्ध कराता है।

निष्कर्षतः, यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है और परिणाम दर्शाते हैं कि सामाजिक कौशल में लिंग आधारित अंतर स्पष्ट रूप से मौजूद है।

10.2.परिकल्पना H_{02} की चर्चा

पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले अशासकीय विद्यालयों के पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करते समय महिला विद्यार्थियों का भावनात्मक परिपक्वता औसत अंक (M = 112.02) पुरुष विद्यार्थियों (M = 92.29) की तुलना में अधिक पाया गया। p-मान (0.013 < 0.05) से यह अंतर सार्थक सिद्ध हुआ।

इस परिणाम को निम्नलिखित कारणों से समझा जा सकता है:

1) भावनात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता: अशासकीय विद्यालयों में छात्राओं को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के अधिक अवसर मिलते हैं।
2) काउंसलिंग और परामर्श सेवाएँ: निजी विद्यालयों में बेहतर काउंसलिंग सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, जिनका अधिकतर उपयोग महिला विद्यार्थी करती हैं।
3) शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात: छोटे समूहों और व्यक्तिगत ध्यान की वजह से महिला विद्यार्थी भावनात्मक स्थिरता प्राप्त करती हैं।
4) सामाजिक समर्थन: परिवार और विद्यालय दोनों का संयुक्त सहयोग महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता को प्रोत्साहित करता है।

इस प्रकार, परिकल्पना H_02 भी अस्वीकृत होती है और निष्कर्ष यह निकलता है कि महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पुरुष विद्यार्थियों से बेहतर है।

10.3.परिकल्पना H_{03} की चर्चा

अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर उनके लिंग (पुरुष एवं महिला) के अनुसार कोई प्रभाव नहीं होता है।

विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि लिंग का भावनात्मक परिपक्वता पर प्रत्यक्ष प्रभाव है। महिला विद्यार्थियों ने भावनात्मक परिपक्वता में उल्लेखनीय रूप से अधिक स्कोर प्राप्त किया।

यह परिणाम संस्थागत संस्कृति और सामाजिक अपेक्षाओं को उजागर करता है:

1) पुरुष विद्यार्थियों से अधिकतर शैक्षणिक और खेल प्रदर्शन की अपेक्षा की जाती है, जबकि महिला विद्यार्थियों को भावनात्मक संवेदनशीलता और सामंजस्य पर अधिक बल दिया जाता है।
2) अशासकीय विद्यालयों में लड़कियों को विभिन्न मंचों पर आत्म-अभिव्यक्ति का अवसर मिलना उनकी भावनात्मक परिपक्वता को बढ़ाता है।

इसलिए, यह परिकल्पना भी अस्वीकृत होती है।

11. सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता का सहसंबंध

सहसंबंध विश्लेषण से r = 0.458 प्राप्त हुआ, जो मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक सहसंबंध है। इसका अर्थ है कि जिन विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल बेहतर हैं, उनकी भावनात्मक परिपक्वता भी अपेक्षाकृत अधिक होती है।

यह निष्कर्ष सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL) के सिद्धांतों की पुष्टि करता है:

1) समग्र विकास की प्रक्रिया: सामाजिक और भावनात्मक विकास अलग नहीं, बल्कि एकीकृत प्रक्रियाएँ हैं।
2) पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका: ये गतिविधियाँ एक साथ संचार, सहयोग और आत्म-नियंत्रण जैसे गुणों को विकसित करती हैं।

12. निष्कर्ष

प्रस्तुत अनुसंधान अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रभाव को सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के संदर्भ में समझने का एक गहन प्रयास है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि अशासकीय विद्यालयों में पुरुष और महिला विद्यार्थियों के बीच सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के स्तर पर सार्थक अंतर विद्यमान है। यह निष्कर्ष न केवल शैक्षिक मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि नीति-निर्माण और विद्यालय प्रबंधन के लिए भी विशेष रूप से प्रासंगिक है।

12.1.मुख्य निष्कर्षों का पुनरावलोकन

1) **सामाजिक कौशल में लैंगिक अंतर:** महिला विद्यार्थियों ने पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में सामाजिक कौशल में अधिक अंक प्राप्त किए। यह परिणाम इंगित करता है कि अशासकीय विद्यालयों का वातावरण, उनकी संसाधन-समृद्ध गतिविधियाँ और सामाजिक अपेक्षाएँ महिला विद्यार्थियों के सामाजिक विकास के लिए अधिक अनुकूल हो सकती हैं।
2) **भावनात्मक परिपक्वता में लैंगिक अंतर:** महिला विद्यार्थियों ने भावनात्मक परिपक्वता के आयामों (जैसे आत्म-जागरूकता, तनाव प्रबंधन, और पारस्परिक संबंध) में भी पुरुष विद्यार्थियों से बेहतर प्रदर्शन किया। यह स्पष्ट करता है कि निजी विद्यालयों में उपलब्ध परामर्श सेवाएँ, व्यक्तिगत ध्यान और सहायक माहौल विशेष रूप से महिलाओं के लिए अधिक लाभकारी साबित हो रहे हैं।
3) **सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता का सहसंबंध:** दोनों आयामों के बीच मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अर्थात्, जिन विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल उच्च स्तर पर हैं, उनकी भावनात्मक परिपक्वता भी सामान्यतः अधिक पाई गई।

इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, परंतु इसका प्रभाव लैंगिक आधार पर भिन्न-भिन्न रूप से सामने आता है।

12.2.शैक्षिक निहितार्थ (EDUCATIONAL IMPLICATIONS)

1) **व्यक्तिगत विकास कार्यक्रम:** अशासकीय विद्यालयों को चाहिए कि वे पुरुष विद्यार्थियों के लिए विशेष सामाजिक कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित करें, ताकि दोनों लिंगों के बीच पाए जाने वाले अंतर को कम किया जा सके।
2) **भावनात्मक शिक्षा (Emotional Education):** कक्षा शिक्षण के साथ-साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-नियंत्रण को बढ़ाने वाले कार्यक्रम अनिवार्य रूप से लागू किए जाने चाहिए।
3) **लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण:** शिक्षकों को इस बात की समझ होनी चाहिए कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के सामाजिक-भावनात्मक विकास में भिन्न पैटर्न हो सकते हैं। इसलिए प्रशिक्षण में लैंगिक संवेदनशीलता मॉड्यूल शामिल किए जाने चाहिए।

12.3.सामाजिक निहितार्थ (SOCIAL IMPLICATIONS)

1) **लैंगिक समानता को प्रोत्साहन:** समाज में अक्सर यह धारणा बनी रहती है कि महिला विद्यार्थियों का सामाजिक और भावनात्मक विकास सीमित होता है, लेकिन इस अध्ययन ने यह स्पष्ट किया है कि अशासकीय विद्यालयों में महिलाएँ इन आयामों में पुरुषों से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। यह रूढ़िवादी धारणाओं को तोड़ने में सहायक होगा।
2) **अभिभावकों की भूमिका:** परिणाम इंगित करते हैं कि आर्थिक रूप से सक्षम परिवार अपनी बेटियों के विकास में अधिक निवेश कर रहे हैं। इससे अन्य अभिभावकों को भी प्रेरणा मिल सकती है कि वे पुत्र-पुत्री दोनों को समान अवसर और प्रोत्साहन दें।
3) **युवा पीढ़ी का समग्र विकास:** यदि अशासकीय विद्यालयों में पाए गए सकारात्मक परिणामों को व्यापक स्तर पर अपनाया जाए, तो भविष्य की पीढ़ी अधिक आत्मविश्वासी, संवेदनशील और सामाजिक रूप से सक्षम हो सकती है।

13. अनुसंधान की सीमाएँ

1) अध्ययन केवल दुर्ग जिले तक सीमित है, इसलिए परिणामों का सामान्यीकरण सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।
2) अध्ययन क्रॉस-सेक्शनल डिजाइन पर आधारित है, जिससे कारण-परिणाम संबंध स्थापित करना कठिन है।
3) पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विविध प्रकार (खेल, सांस्कृतिक, शैक्षणिक) का अलग-अलग प्रभाव नहीं देखा गया।

14. भविष्य की अनुसंधान दिशाएँ

1) **लांगिट्यूडिनल अध्ययन:** समय के साथ विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास का ट्रैकिंग अध्ययन।
2) **तुलनात्मक अध्ययन:** अन्य जिलों या राज्यों के अशासकीय विद्यालयों में समान अनुसंधान।
3) **गुणात्मक अध्ययन:** विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के अनुभवों पर आधारित केस स्टडी।

4) **सांस्कृतिक तुलना:** विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों में अशासकीय विद्यालयों के प्रभाव का अध्ययन।
5) **न्यूरो-विकासात्मक अध्ययन:** मस्तिष्क विकास और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में प्रयोगात्मक अनुसंधान।

15. अंतिम निष्कर्ष

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अशासकीय विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रभाव लिंग-विशिष्ट रूप से सामने आता है। महिला विद्यार्थी सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता दोनों ही आयामों में पुरुष विद्यार्थियों से बेहतर प्रदर्शन करती हैं। इसका मुख्य कारण संसाधन-समृद्ध वातावरण, प्रगतिशील दृष्टिकोण, और पारिवारिक निवेश है।

हालाँकि, इस अंतर को शिक्षा प्रणाली की असमानता के रूप में भी देखा जा सकता है। अतः आवश्यक है कि अशासकीय विद्यालय पुरुष विद्यार्थियों के विकास पर अधिक ध्यान दें और संतुलित नीतियाँ अपनाएँ। यदि ऐसा किया गया तो ये विद्यालय केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता ही नहीं बल्कि सामाजिक और भावनात्मक विकास के आदर्श केंद्र भी बन सकते हैं।

संदर्भ सूची

अग्रवाल, पी., एवं शर्मा, ए. (2021). निजी विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधियों की गुणवत्ता: एक तुलनात्मक अध्ययन। निजी शिक्षा समीक्षा, 28(3), 145-162.

गुप्ता, वी., एवं पटेल, एम. (2019). छत्तीसगढ़ के निजी विद्यालयों में शैक्षणिक गुणवत्ता एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियां। मध्य भारतीय शिक्षा अध्ययन, 15(4), 234-249.

खान, एफ., एवं वर्मा, आर. (2020). छत्तीसगढ़ के निजी विद्यालयों में पारिवारिक सहभागिता एवं विद्यार्थी उपलब्धि। पारिवारिक शिक्षा जर्नल, 12(1), 67-82.

त्रिपाठी, एन., एवं मिश्रा, के. (2019). निजी विद्यालयों में लैंगिक भूमिकाएं एवं भावनात्मक विकास। भारतीय मनोविज्ञान शोध, 41(3), 178-193.

मेहता, डी., एवं शाह, पी. (2020). निजी विद्यालयों में व्यक्तिगत ध्यान एवं सामाजिक कौशल विकास। व्यक्तित्व विकास पत्रिका, 25(2), 123-138.

Bandura, A. (2001). Social cognitive theory: An agentic perspective. Annual Review of Psychology, 52(1), 1–26. https://doi.org/10.1146/annurev.psych.52.1.1

Bem, S. L. (1981). Gender schema theory: A cognitive account of sex typing. Psychological Review, 88(4), 354–364. https://doi.org/10.1037/0033-295X.88.4.354

Deci, E. L., & Ryan, R. M. (2000). The “what” and “why” of goal pursuits: Human needs and the self-determination of behavior. Psychological Inquiry, 11(4), 227–268. https://doi.org/10.1207/S15327965PLI1104_01

CASEL. (2020). What is social-emotional learning? Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning. https://casel.org/what-is-sel/

Scott, W. R. (2014). Institutions and organizations: Ideas, interests, and identities (4th ed.). Thousand Oaks, CA: Sage Publications.